निसार तेरी चहल पहलपर हज़ारों ईदें रबी–उल अव्वल
सिवाये इब्लीस के जहाँ में सभी तो खुशियाँ मना रहे हैं
हश्र तक डालेंगे पैदाइशे मौला की धूम
मिस्ले फ़ारस नज्द के क़िल–ए गिराते जायेंगे

मीलाद-ए-मुस्तफ़ा

मुरत्तिब
तौहीद अहमद खाँ रज़वी

नाशिर
तहसीनी फ़ाउन्डेशन
चक महमद, तहसीनी नगर, पुराना शहर, बरेली शरीफ–243005

सीरत–ए–मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम

ख़ानदानी हालात

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का ख़ानदान शराफ़त में तमाम दुनिया के ख़ानदानों से अशरफ़ और आला है। और यह वह हक़ीक़त है कि आपके बद–तरीन दुश्मन मक्का के काफिर भी इसका इन्कार न कर सके। चुनांचे जब अबू सुफियान कुफ्र की हालत में थे, रूम के बादशाह हिरक़्ल के भरे दरबार में इस हक़ीक़त का इक़रार किया कि ''वह हम में आला ख़ानदान वाले हैं।'' (बुख़ारी शरीफ़)

हालांकि वह उस वक़्त आपके बद–तरीन दुश्मन थे और चाहते थे कि अगर कहीं ज़रा सी भी गुन्जाईश मिले तो आपकी पाक ज़ात पर कोई ऐब लगाकर रूम के बादशाह की नज़रों में आपका विक़ार गिरा दें।

हदीसः– हज़रत वासिला बिन असक़ा से मरवी है वह फ़रमाते हैं कि मैंने नबी–ए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि अल्लाह तआ़ला ने (हज़रत) इस्माईल (अलैहिस्सलाम) में से किनाना को चुना और किनाना में से कुरैश को मुन्तख़ब फ़रमाया और कुरैश में से बनी हाशिम को चुना और बनी हाशिम में से मुझको चुना। (मुस्लिम शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, हदीस न0. 5493, बाब फ़ज़ाइले सय्यिदिल मुरसलीन)

हाशिम

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के परदादा हाशिम बड़ी शान व शौकत के मालिक थे। उनका असली नाम अम्र

था। बहुत बहादुर, सख़ी और आला दर्जे के मेहमान नवाज़ा थे। एक साल अरब में बहुत सख़्त क़हत पड़ गया और लोग दाने दाने को मोहताज हो गये तो ये मुल्के शाम से सूखी रोटियाँ ख़रीद कर हज के दिनों में मक्का पहुँचे और रोटियों का चूरा करके ऊँट के गोश्त के शोरबे में सरीद बनाकर तमाम हाजियों को ख़ूब पेट भर कर ख़िलाया। उस दिन से लोग उनको हाशिम (रोटियों का चूरा करने वाले) कहने लगे। (मदारिजुन्नुबुव्वह जिल्द 2, सफ़ा 8)

अब्दुल मुत्तलिब

हुजूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के दादा अब्दुल मुत्तलिब का असली नाम ''शैबा'' है। यह बड़े ही नेक नय़्स, आबिद और ज़ाहिद थे। गारे हिरा में खाना पानी साथ लेकर जाते और कई–कई दिनों तक लगातार ख़ुदा की इबादत में मसरूफ़ रहते। रमज़ान शरीफ़ के महीने में अक्सर ग़ारे हिरा में एतिकाफ़ किया करते थे। नबी–ए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का नूरे नुबुव्वत उनकी पेशानी में चमकता था और उनके बदन से मुश्क़ की ख़ुश्बू आती थी। अरब वालों ख़ासकर क़ुरैश को उनसे बड़ी अ़क़ीदत थी। मक्का वालों पर जब कोई मुसीबत आती या कहत पड़ जाता तो लोग अब्दुल मुत्तलिब को साथ लेकर पहाड़ पर चढ़ जाते और बारगाहे ख़ुदावन्दी में उनको वसीला बनाकर दुआ़ माँगते थे तो दुआ़ मक़बूल हो जाती थी। (ज़रक़ानी अलल मवाहिद जिल्द 1, सफ़ा 72)

हज़रत अब्दुल्लाह

यह हमारे प्यारे आक़ा मुख़तरे दो–आलम हुजूर

सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के वालिद माजिद हैं। अब्दुल मुत्तलिब के तमाम बेटों में यह सबसे ज़्यादा बाप के लाडले और प्यारे थे। चूंकि इनकी पेशानी में नूर–ए–मुहम्मदी पूरी शान व शौकत के साथ जलवा गर था, इसलिए यह खूबसूरती के पैकर थे। आप बड़े इबादत गुज़ार थे। (ज़रकानी अलल मवाहिब जिल्द 1, सफ़ा 101)

बरकाते नुबुव्वत का जुहूर

जब आफ़ताबे रिसालत के निकलने का ज़माना क़रीब आया तो दुनिया में बहुत से ऐसे अजीब–अजीब वाक़िआ़त ज़ाहिर होने लगे, जो सारी काइनात को झंझोड़–झंझोड़ कर यह बशारत देने लगे कि अब रिसालत का आफ़ताब अपनी पूरी आब व ताब के साथ तुलूअ़ होने वाला है।

चुनाँचि असहाबे फील का हलाक़ हो जाना, अचानक बारान–ए–रहमत से अरब की सर ज़मीन का सरसब्ज़ व शादाब हो जाना और बरसों की खुश्क साली दूर होकर पूरे मुल्क में खुशहाली का दौर दौरा हो जाना, बुतों का मुँह के बल गिर पड़ना, फारस के मजूसियों की एक हज़ार बरस से जलाई हुई आग का एक लम्हे में बुझ जाना, किसरा के महल में ज़लज़ला आना और उसके चौदह कंगूरों का गिर जाना, हमदान और कुम के दरमियान छः मील लम्बे और छः मील चौड़े बुहीरा–ए–सावा (एक झील का नाम) का बिल्कुल खुश्क हो जाना, शाम और कूफ़ा के दर्मियान वादी–ए–समावा की खुश्क नदी का अचानक जारी हो जाना और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की वालिदा माजिदा के बदन से एक ऐसे नूर का निकलना जिससे बुसरा के महल रौशन हो जाना। यह सब वाक़िआ़त इस बात की तरफ़ इशारा कर रहे थे

कि दुनिया में एक अ़जीब इन्क़िलाब आने वाला है। इसी तरह समन्दरों और दरियारों के जानवरों ने एक दूसरे को खुशखबरी सुनाई कि हज़रत अबुल क़ासिम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की विलादत बा–सआ़दत का वक़्त क़रीब आ गया है। (ज़रकानी अलल मावाहिब, जिल्द 1, सफ़ा 108)

विलादत बा सआ़दत

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की मुबारक पैदाईश असहाबे फ़ील के 55 दिन बाद 12 रबिउल अव्वल शरीफ़ मुताबिक़ 20 अप्रैल 571 ईसवी बरोज़ पीर सुबह सादिक़ के वक़्त हुई।

तारीखे आलम में यह वह निराला और अज़मत वाला दिन है कि इसी दिन आलमे काइनात की पैदाइशे बाइस, सारी दुनिया के बिगड़े हुए निज़ामों को सुधारने वाला, हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की कश्ती का राज़, बानी–ए काबा की दुआ़, हज़रत ईसा इब्ने मरयम की बशारत का जुहूर हुआ।

वह यूँ तशरीफ़ लाये हम गुनहगारों के झुरमुट में
मसीहा जैसे आ जाता है बीमारों के झुरमुट में

हुज़ूर सदरूल उलमा मुहद्दिस बरेलवी अ़लैहिर्रहमा

आप पाकीज़ा बदन, नाफ़ बुरीदा (नाफ़ कटे हुए), ख़तना किये हुये, खुश्बू में बसे हुये, सज्दे की हालत में मक्का मुकर्रमा की सरज़मीन पर अपने वालिदे माजिद के मकान में अन्दर पैदा हुये। वालिद कहाँ थे जो बुलाये जाते और अपने बेटे को देखकर निहाल होते, वह पहले ही वफ़ात पा चुके थे। दादा बुलाये गये जो इस वक़्त काबा शरीफ़ के तवाफ. में मशगूल थे। यह खुशख़बरी सुनकर दादा अब्दुल मुत्तलिब खुशी खुशी काबा शरीफ़ से घर

आये, और बहुत ही जोशो व मुहब्बत में अपने पोते को कलेजे से लगा लिया, फिर काबा शरीफ़ में ले जाकर ख़ैर व बरकत की दुआ माँगी और 'मुहम्मद' नाम रखा।

अबू लहब ने अपनी लौंडी आज़ाद कर दी

आपके चचा अबू लहब की लौंडी सुवैबा खुशी खुशी में दौड़ती हुई गयी और अबू लहब को भतीजा होने की खुश्खबरी दी तो उसने इस खुशी में शहादत की उंगली के इशारे से सुवैबा को आज़ाद कर दिया। जिसका फल अबू लहब को यह मिला कि उसकी मौत के बाद उसके घर वालों ने उसे ख़्वाब में देखा और हाल पूछा। तो उसने अपनी उंगली उठाकर यह कहा कि.....

''तुम लोगों से जुदा होने के बाद मुझे कुछ (खाने पीने को) नहीं मिला इसके अलावा कि सुवैबा को आज़ाद करने की वजह से इस उंगली के ज़रिये कुछ पानी पिला दिया जाता हूँ।'' (बुखारी जिल्द 2)

इसके तहत हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी अ़लैहिर्रहमा लिखते हैं.....

''इस जगह मीलाद करने वालों के लिये एक सनद (दलील) है कि यह हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की विलादत की रात में खुशी मनाते हैं और अपना माल ख़र्च करते हैं। मतलब यह है कि जब अबू लहब को जो काफ़िर था, और उसकी मज़म्मत (बुराई) में कुर्आन नाज़िल हुआ। हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की विलादत पर खुशी मनाने और बाँदी का दूध खर्च करने पर जज़ा दी गई। तो उस मुसलमान का क्या

हाल होगा जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की मुहब्बत में सरशार होकर खुशी मनाता है और अपना माल ख़र्च करता है। (मदारिजुन्नुबुव्वह, जिल्द 2, सफ़ा 19)

बचपन की अदायें

हज़रत हलीमा का बयान है कि आपका गहवारा यानि झूला फ़िरिश्तों के हिलाने से हिलता था। आप चाँद की तरफ़ उंगली उठाकर इशारा फ़रमाते थे तो चाँद आप की उंगली के इशारों पर हरकत करता था।

चाँद झुक जाता जिधर उंगली उठाते मह्द में
क्या ही चलता था ख़ूब इशारों पर खिलौना नूर का
(आलाहज़रत फ़ाज़िले बरेलवी अलैहिर्रहमा)

जब आपकी ज़बान खुली तो सबसे पहले कलाम जो आपकी ज़बाने मुबारक से निकला वह यह था :

जब आप अपने पैरों पर चलने लगे तो बाहर निकल कर बच्चों को खेलते हुये देखते मगर खुद खेल कूद में शरीक नहीं होते थे। लड़के आपको खेलने के लिये बुलाते तो आप फ़रमाते कि मैं खेलने के लिये नहीं पैदा किया गया हूँ। (मदारिजुन्नुबुव्वह, जिल्द 2, सफ़ा 21)

आपकी दुआ़ से बारिश

एक बार मुल्के अ़रब में बहुत ख़ौफ़नाक कह्त पड़ गया। मक्का वालों ने बुतों से फ़रियाद करने का इरादा किया मगर एक हसीन व जमील बूढ़े ने मक्का वालों से कहा कि ऐ मक्का वालों! हमारे अन्दर अबू तालिब मौजूद हैं जो बानी–ए काबा हज़रत

इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की नस्ल से हैं, और काबे की मुतवल्ली और सज्जादानशीन भी हैं, हमें उनके पास चलकर दुआ़ की दरख्वास्त करना चाहिए। चुनाँचि अ़रब के सरदार अबू तालिब के पास आये और फ़रियाद करने लगे कि ऐ अबू तालिब! कह्त की आग ने सारे अ़रब को झुलस कर रख दिया है, जानवर घास पानी के लिये तरस रहे हैं और इन्सान दाना पानी न मिलने की वजह से तड़प–तड़प कर दम तोड़ रहे हैं। काफ़िलों का आना जाना बन्द हो चुका है और हर तरफ़ बरबादी और वीरानी का दौरा दौरा है। आप बारिश के लिये दुआ़ कीजिये। अ़रब वालों की फ़रियाद सुनकर अबू तालिब का दिल भर आया। और हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को साथ लेकर काबा शरीफ़ में गये और हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को काबा शरीफ़ की दीवार से टेक लगाकर बिठा दिया और दुआ़ माँगने में मशगूल हो गये। दुआ़ के दर्मियान में हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने अपनी उंगली मुबारक को आसमान की तरफ़ उठा दिया। एक दम चारों तरफ़ से बदलियाँ नमुदार हुईं और फ़ौरन ही इस ज़ोर का बारान–ए–रहमत बरसा कि अ़रब की ज़मीन सैराब हो गई। जंगलों और मैदानों में हर तरफ़ पानी ही पानी नज़र आने लगा। चटयल मैदानों की ज़मीन सर–सब्ज़ व शादाब होगई। कह्त ख़त्म हो गया और काल कट गया और सारा अ़रब खुशहाल और निहाल हो गया। (ज़रक़ानी अलल मवाहिब जिल्द 1, सफ़ा 190)

आपका किरदार

हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का बचपन का ज़माना ख़त्म हुआ, जवानी का ज़माना आया, तो बचपन की तरह

आप की जवानी भी हया, असमत और विक़ार का कामिल नमूना थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की पूरी ज़िन्दगी बेहतरनी अख़लाक़ व आदात का ख़ज़ाना थी। सच्चाई, दयानत दारी, वफ़ादारी, वादे की पाबन्दी, बुज़ुर्गों की अ़ज़मत, छोटों पर शफ़क़त, रिश्तेदारों से मुहब्बत, रहमो सख़ावत, क़ौम की ख़िदमत, दोस्तों से हमदर्दी, ग़रीबों और मुफ़लिसों की मदद, दुश्मनों के साथ नेक बरताव, मख़लूक़े ख़ुदा की ख़ैर ख़्वाही ग़र्ज़ यह कि तमाम अच्छी ख़सलतों में आप इतने बलन्द मर्तबे पर पहुँचे हुये थे कि दुनिया के बड़े–बड़े इन्सानों के लिये वहाँ तक पहुँचना तो क्या, उसका तसव्वुर भी मुमकिन नहीं है।

ऐलान–ए–नुबुव्वत

जब हुज़ूर की मुक़द्दस ज़िन्दगी चालीस साल की हुई तो आपने अपनी नुबुव्वत का ऐलान फ़रमाया। तीन साल तक खुफ़िया तौर पर इस्लाम की तबलीग़ फ़रमाते रहे, इस तीन साल में मुसलमानों की एक जमाअ़त तैयार हो गई।

ऐलाने नुबुव्वत के चौथे साल अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को अलल ऐलान (खुल्लम खुल्ला) तबलीग़ फ़रमाने का हुक्म दिया। चुनाँचि इसके बाद आप अलल ऐलान तबलीग़ फ़रमाने लगे। पूरा अ़रब आपकी मुख़ालफ़त करने लगा और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और मुसलमानों को सख़्त तकलीफ़ पहुँचाने का एक लम्बा सिलसिला शुरू हो गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के पीछे शरीर लड़कों को लगा दिया जाता था जो रास्तों में आप पर फ़ब्तियाँ कसते, गालियाँ देते और यह दीवाना है यह दीवाना है का शोर मचाकर आप के ऊपर पत्थर फेंकते, कभी मक्का के काफिर

आपके रास्ते पर काँटे बिछाते, कभी आपके जिस्मे मुबारक पर नजासत डालते। ग़र्ज़ कि हर तरह से आप पर जुल्मों सितम ढाते।

हिजरत

मक्का के काफ़िरों ने जब यह देखा कि हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और मुसलमानों के मददगार मक्का के बाहर मदीना में भी हो गये हैं तो मक्का के काफ़िरों को यह ख़तरा महसूस हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) भी मदीना चले जायें और वहाँ से अपने मददगारों की फ़ौज लेकर मक्का पर चढ़ाई कर दें। इसको लेकर काफ़िरों ने एक मीटिंग की और उस मीटिंग में यह फ़ैसला हुआ कि हर क़बीले का एक–एक मशहूर बहादुर तलवार लेकर उठ खड़ा हो और सब एक बार हमला करके मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को क़त्ल कर डालें।

जब मक्का के काफ़िर मीटिंग में हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के क़त्ल पर इत्तिफ़ाक़ करके अपने घरों को रवाना हो गये तो हज़रत जिब्राईल रदि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अल्लाह तआ़ला का हुक्म लेकर नाज़िल हो गये कि ऐ महबूब! आज रात को आप अपने बिस्तर पर न सोयें और हिजरत करके मदीना तशरीफ़ ले जायें।

मक्का के काफ़िरों ने अपने प्रोग्राम के मुताबिक़ हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के घर को घेर लिया और इन्तिज़ार करने लगे कि हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम सो जायें तो उन पर कातिलना हमला किया जाये।

हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत

अ़ली रदि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से फ़रमाया कि तुम मेरी सब्ज़ (हरी) रंग की चादर ओढ़कर मेरे बिस्तर पर सो रहो और मेरे चले जाने के बाद तुम कुरैश की अमानतें उनके मालिकों को सौंप कर मदीने चले आना।

हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने अपने बिस्तर पर हज़रत अ़ली रदि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को सुलाकर एक मुट्ठी मिट्टी हाथ में ली और सूरा–ए यासीन की शुरूआती आयतों को तिलावत फ़रमाते हुये घर से बाहर तशरीफ़ लाये और मुहासरा करने वाले काफ़िरों के सरों पर मिट्टी डालते हुये निकल गये, न किसी को नज़र आये और न किसी को ख़बर हुई।

जश्ने ईद मीलादुन्नबी कुर्आन व हदीस की रौशनी में

हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की विलादते मुबारका पर खुशियाँ मनाने और जश्ने ईद मीलादुन्नबी की बहारों से लुत्फ़ अन्दोज़ होने का सिलसिला आशिक़ाने रसूल की प्यारी सुन्नत, तारीखी अ़मल और बुज़ुर्गाने दीन का तरीक़ा रहा है। इस के बावुजूद चन्द लोग इस बात को फैलाने में लगे हैं कि ईद मीलादुन्नबी मनाना बिदअ़त है, नहीं मनाना चाहिए।

यहाँ पर अल्लाह की तौफ़ीक़ से ईद मीलादुन्नबी पर एतिराज़ात के जवाब कुर्आन व हदीस की रौशनी में पेश किये जा रहे हैं।

ईद मीलादुन्नबी ईदों की ईद है

अल्लाह की नेमतों और उसकी इनायतों पर शुक्र के इज़हार के लिये एक तरीक़ा और सूरत यह है कि उस खुशी का

इज़हार ईद के तौर पर किया जाए। अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को बेशुमार नेमतों से नवाज़ा है, लेकिन सबसे उम्दा और बेहतरीन नेमत जो उसने अ़ता फ़रमाई है वह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ज़ाते मुबारक है, जिसको अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों के दर्मियान भेजकर बड़ा एहसान फ़रमाया है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला का इरशाद है ''बेशक अल्लाह का बड़ा एहसान हुआ मुसलमानों पर कि उनमें उन्हीं में से एक रसूल भेजा।'' (सूरा–ए आले इमरान, आयत 164)

पहली उम्मतों में भी शुक्र का यह तरीका था कि जिस दिन अल्लाह तआ़ला की कोई खास नेमत मयस्सर आती तो उस दिन को गुज़री हुई उम्मतें ईद के तौर पर मनातीं थीं। और यह सुन्नतें अम्बिया भी है। हज़रतें ईसा अ़लैहिस्सलाम अल्लाह तआ़ला की बारगाह में यूँ अ़र्ज़ करते हैं ''हमारे रब हम पर आसमान से ख़्वान (दस्तरख़्वान) उतार कि वह हमारे लिये ईद हो जाये हमारे अगले पिछलों की।'' (सुरा–ए मायदा, आयत 114)

ग़ौर करें! कि जिस दिन हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर आसमान से दस्तरख़्वान उतरे तो वह ईद हो जाये और जिस दिन आक़ाए दो जहाँ सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम जिनके सदक़े में करोड़ों नेमतें अल्लाह तआ़ला मख़लूक़ को अ़ता फ़रमाता है, तशरीफ़ लायें, वह दिन क्यों ईद नहीं हो सकता?यक़ीनन वह ईद का दिन है। यही वजह है कि दुनिया के तमाम मुसलमान इस दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के मीलाद की महफ़िलें मुनअ़क़िद करते हैं और जुलूस निकालते हैं।

ईद मीलादुन्नबी पर खुशी मनाना अल्लाह तआ़ला की सुन्नत है

तमाम सीरत की किताबों में इस क़िस्म की रिवायतें अक्सर मिलती हैं जिनमें हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की विलादत के हालात के साथ वाज़ेह तौर पर यह बयान भी है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने महबूब सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की विलादत पर खुशी मनाई, पूरे साल जश्न के तौर पर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की आमद पर सारी ज़मीन को सर सब्ज़ो शादाब कर दिया, हर तरफ़ रहमतों और बरकतों की भरमार कर दी और कह्त वाले इलाकों में रिज़्क़ की इतनी कुशादगी फ़रमा दी कि वह साल खुशी का साल कहलाया। ख़साइसुल कुबरा में है ''जिस साल नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम हज़रत आमिना रदि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा को वदीअ़त हुआ वह फ़तहो नुसरत, तरो ताज़गी और खुशी का साल कहलाया। कुरैश वाले इससे पहले मआ़शी, बदहाली, तंगी और कह्त साली में मुबतला थे। विलादत की बरकत से इस साल अल्लाह तआ़ला ने बे आबो ग्याह ज़मीन को शादाबी और हरियाली अ़ता फ़रमाई और दरख़्तों की मुर्दा शाखों को हरा भरा करके उन्हें फ़लों से लाद दिया। कुरैश वाले इस तरह हर तरफ़ से कसीर ख़ैर आने से खुशहाल हो गये।'' खुद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के अ़मल से इसका सुबूत मिलता है, इमाम जलालुद्दीन सियूती अ़लैहिर्रहमा ने ''अलहावी लिलफ़तावा'' में इस तअ़ल्लुक़ से रौशनी डाली है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने खुद भी अपना मीलाद मनाया। इस लिहाज़ से यह सुन्नते रसूल भी है। हज़रत अबू क़तादा रदि अ़ल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि ''रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से पीर के रोज़े के बारे में

सवाल किया गया तो आक़ा ने इरशाद फ़रमायाः मैं इसी दिन पैदा किया गया।'' (मिश्कात शरीफ़) इस हदीसे पाक से यह बात ब–खूबी पता चलती है कि आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने अपनी विलादत के दिन रोज़ा रखकर अपनी विलादत की खुशी मनाई।

आयते करीमा में फ़ज़्ल और रहमत से हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम मुराद हैं

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : ''तुम फ़रमाओ अल्लाह ही के फ़ज़्ल और उसकी रहमत और उसी पर चाहिए कि खुशी करें।'' (सूरा–ए यूनुस, आयत 58) अल्लाह तआ़ला ने इस आयते करीमा में दो चीज़ों का ख़ास तौर पर ज़िक्र फ़रमाया है (1) फ़ज़्ल (2) रहमत। अब सवाल यह पैदा होता है कि इस आयत में फ़ज़्ल और रहमत से क्या मुराद है जिस पर खुशी मनाने का हुक्म दिया गया है। इसका जवाब यह है कि इस आयत में फ़ज़्ल और रहमत से हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम मुराद हैं जैसा कि अक्सर मुफ़स्सिरीने किराम ने फ़रमाया है। और इसकी वज़ाहत में कि अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत से मुराद हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम हैं, दूसरी कुर्आ़नी आयत से भी इसकी ताईद मिलती है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है ''और तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो ज़रूर तुम शैतान के पीछे लग जाते।'' (सुरा–ए निसा, आयत 83) और फ़रमाता है ''अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुम पर न होती तो तुम टोटे वालों में हो जाते।'' (यानि तुम घाटे वालों में होते) (सुरा–ए बक़रा, आयत 64) इन आयतों की तफ़सीर में मुफ़स्सिरीने किराम ने फ़रमाया है कि यहाँ पर अल्लाह के फ़ज़्ल

और उसकी रहमत से हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम मुराद हैं। और यह ह़क़ीक़त तो बिल्कुल अयां है कि अल्लाह तआ़ला ने आपको सारे जहान के लिये रहमत बनाकर भेजा। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है ''(ऐ महबूब) आपको तमाम जहानों के लिये रहमत बनाकर भेजा।'' (सुरा–ए अम्बिया, आयत 107)

इन तफ़सीलात को जानने के बाद यह साफ़ हो गया कि आयते करीमा में अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत से हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम मुराद हैं।

इस्लामी तालीमात से रहिए बा–ख़बर
पढ़ते रहिए

माहनामा

तैबा

हिन्दी इस्लामी मैगज़ीन

क़ीमत एक शुमारा 5रु0

सालाना मेम्बरशिप फ़ीस 100रु0
डाक ख़र्च सहित

तहसीनी फ़ाउन्डेशन

चक महमद, तहसीनी नगर, पुराना शहर, बरेली शरीफ